

पैगंबर इब्राहिम के जीवन की झलकियां

रेटगि:

वविरण: ?????? ?????????? ?? ????? ?? ?????? ?? ?????? ?????????? ??? ?????? ?? ?? ?? ?? ?? ?????????? ?????

श्रेणी: [पाठ](#) , [इस्लामी मान्यताएं](#) , [अन्य पैगंबरों का जीवन](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उददेश्य:

·पैगंबर इब्राहिम (अब्राहम) के जीवन की कई घटनाओं को जानना।

·यह समझना कि इस्लाम में अल्लाह की इच्छा के आगे झुकना एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है।

·यह जानना कि अल्लाह जसिं चाहता है उसे ज्ञान देता है और यह उम्र पर आधारति नहीं होता है।

अरबी शब्द:

·????????? - अब्राहम का अरबी शब्द।

·????? - यह इस्लाम और अरबी भाषा में इस्तेमाल कयिा जाने वाला शब्द है जो शैतान यानि बुराई की पहचान को दर्शाता है।

पैगंबर इब्राहिम अल्लाह के पैगंबर थे और उन्हें अल्लाह ने खलील-अल्लाह कह कर सम्मानति कयिा, जसिका अर्थ है जसिं ईश्वर ने अपने प्यार के लिए चुना।

कुरआन के वभिनिन अध्यायों में इब्राहिम की धार्मकता के मॉडल के रूप में प्रशंसा की जाती है। वह एक ऐसा व्यक्ति थिा जसिका जनिका चरतिर सभी वशिवासयिों के लिए एक उदाहरण है; वह दयालु, सहनशील, बहादुर और भरोसेमंद थे। अल्लाह उनका वर्णन इस प्रकार करता है, वह कहता है:



वास्तव में, इब्राहीम एक सरदार था, अल्लाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था और मशिरणवादियों (मुश्रकियों) में से नहीं था। अल्लाह के उपकारों को मानता था, अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधी राह दिखा दी। और हमने उसे संसार में भलाई दी और वास्तव में वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

(कुरआन 16: 120-122)

सबक 1

माता-पति अपने बच्चों से सीख सकते हैं और बुजुर्ग युवाओं से सीख सकते हैं।

जरूरी नहीं कि ज्ञान और समझ उम्र के साथ आये और सिर्फ इसलिए कि कोई व्यक्ति उम्र में बड़ा है इसका मतलब यह नहीं है कि उसका अनुसरण किया जाये। जैसी तरह से पैगंबर इब्राहिम ने अपने पति के साथ व्यवहार किया, वह एक बच्चे का अपने माता-पिता का सम्मान करने लेकिन फिर भी अपने माता-पिता के तरीकों और जीवन शैली को खारजि करने का एक बहुत अच्छा उदाहरण है।

तथा जब इब्राहीम ने अपने पति आजर से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हो? मैं आपको तथा आपकी जात को खुले कृपथ में देख रहा हूँ।" (कुरआन 6: 74)

इब्राहिम के पति आजर मूर्तियों के मूर्तकार थे, इसलिए छोटी उम्र से ही इब्राहिम को पता था कि मूर्तियां लकड़ी या पत्थर के टुकड़ों से ज्यादा कुछ नहीं हैं - नरिजीव वस्तुएं जो कोई लाभ या हानि नहीं पहुंचा सकती हैं। उन्हें यह असाधारण लगा कि लोग उन्हें देवताओं के रूप में पूजते हैं!

इब्राहिम ने अपने पति को समझाने की कोशिश की कि मूर्तिपूजा की उनकी प्रथा गलत थी और अंततः बेकार थी। उसने कोमल स्वर में, दयालु शब्दों का उपयोग करते हुए अपने पति से बात की, और मूर्तियों की पूजा में नहिती खतरों के बारे में चेतावनी देने की कोशिश की, लेकिन उनके पति नाराज और क्रोधित हो गए।

जब उसने कहा अपने पति से: हे मेरे प्रिय पति! क्यों आप उसे पूजते हैं, जो न सुनता है, न देखता है और न आपके कुछ काम आता है? हे मेरे पति! मेरे पास वह ज्ञान आ गया है, जो आपके पास नहीं आया, अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आपको सीधी राह दिखा दूंगा। हे मेरे प्रिय पति! शैतान की पूजा न करें, वास्तव में, शैतान अत्यंत कृपाशील अल्लाह का अवज्ञाकारी है। हे मेरे पति! वास्तव में, मुझे भय हो रहा है कि आपको अत्यंत कृपाशील की कोई यातना आ लगे, तो आप शैतान के मतिर हो जायेंगे। उनके पति ने कहा: क्या तू हमारे पूज्यों से वमिख हो रहा है? हे इब्राहीम! यदि तू इससे नहीं

रुका, तो मैं तुझे पत्थरों से मार दूंगा और तू मुझसे वलिंग हो जा, सदा के लिए।" (क़ुरआन 19: 42-46)

इब्राहिम को डर था कि किहीं उनके पति भटक न जाएं और शैतान के चंगुल में न फंस जाएं। वह अपनी उम्र से अधिक बुद्धिमान थे फिर भी इब्राहिम के पति ने शायद इस तथ्य को खारजि करते हुए नहीं सुना कि उसका बच्चा उसे कैसे मार्गदर्शन कर सकता है और सखा सकता है। इब्राहिम ने अपना आपा नहीं खोया बल्कि सिम्मान और समझदारी के साथ अपने पति के धमकी भरे रवैये का जवाब दिया।

इब्राहिम ने कहा: सलाम है आपको! मैं क़्षमा की प्रार्थना करता रहूंगा आपके लिए अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बिड़ा करुणामय है। तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जसै तुम पुकारते हो अल्लाह के सवि और प्रार्थना करता रहूंगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना करके असफल नहीं होऊंगा।" (क़ुरआन 19:47-48)

सबक 2

इस्लाम तार्किक है।

इस्लाम के दृष्टिकोण से पैगंबर इब्राहिम को न तो यहूदी माना जाता है और न ही ईसाई; वह एक पैगंबर थे जो अल्लाह की इच्छा के सामने झुके और इस प्रकार वो एक मुसलमान है। ईश्वर हमें क़ुरआन में बताता है कि किम उम्र से ही पैगंबर इब्राहिम उस एक ईश्वर को खोजने लगे जो पूजा के योग्य हो। उन्होंने महसूस किया कि उनके लोग उनके पति द्वारा बनाई गई जनि मूर्तियों की पूजा करते थे वे लकड़ी और पत्थर के अलावा और कुछ नहीं थीं। वह सहज रूप से जानते थे कि सूर्य, चंद्रमा और तारे कसि भी प्रकार के देवता नहीं हैं। इस्लाम हमें बताता है कि यदि कोई व्यक्ति खोज करे तो अल्लाह की पूजा करना ही एकमात्र तार्किक नषिकर्ष नकिलेगा। ठीक ऐसा ही इब्राहिम ने किया था। सबसे पहले उन्होंने लकड़ी की मूर्तियों को जवाब देने के लिए कहा और फिर उन्होंने मूर्तियों को नष्ट कर दिया। वे न बोल सकते थे और न ही अपनी रक्षा कर सकते थे। फिर उन्होंने आकाश की ओर देखा और उत्तर खोजने का प्रयास किया।

तो जब उसपर रात छा गयी, तो उसने एक तारा देखा। कहा: ये मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा: मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता। फिर जब उसने चांद को चमकते देखा, तो कहा: ये मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा: यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया, तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊंगा। फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते देखा, तो कहा: ये मेरा पालनहार है। ये सबसे बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया, तो उसने कहा: हे मेरी जात के लोगो! नःसिंदेह मैं उससे वरिक्त हूँ, जसै तुम अल्लाह का साझी बनाते हो। मैंने तो अपना मुख एकाग्र होकर, उसकी ओर कर

लिया है, जसिने आकाशों तथा धरती की रचना की है और मैं मुश्रकियों में से नहीं हूँ।" (कुरआन 6: 76-79)

पैगंबर इब्राहिम के जीवन की इस घटना से सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है। तर्क का उपयोग करके, कोई भी आसानी से उन संकेतों को देख सकता है जो अल्लाह के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं और यह कविह अकेला ही पूजा के योग्य है। सूर्य, चंद्रमा और तारे अपने आप में देवता नहीं हैं बल्कि अल्लाह के अस्तित्व और महानता के प्रतीक हैं। अपने चित्त के माध्यम से इब्राहिम ने अल्लाह के अस्तित्व और उदात्त प्रकृति को समझ लिया।

सबक 3

एक सच्चा आस्तिक अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी या किसी को भी त्यागने के लिए तैयार रहता है।

इस्लाम के अनुसार पैगंबर इब्राहिम के सबसे बड़े बेटे पैगंबर इस्माइल थे। जब पैगंबर इस्माइल अपने पति के साथ चलने और उनसे बात करने की उम्र के हो गए, तो इब्राहिम ने उन्हें समझाया कि मैंने एक सपना देखा है जसिमें मैं तुम्हें मार रहा हूँ। पैगंबरों के सपने रहस्योद्घाटन का रूप होते हैं; इस प्रकार वे ईश्वर का एक आदेश होता है। वास्तव में अगर किसी व्यक्ति का पति उससे कहे कि उसे एक सपने के कारण मारा जायेगा, तो वे सपने पर संदेह करेगा और साथ ही उस व्यक्ति के वक्ता पर सवाल उठाएगा! लेकिन इस्माइल अपने पति की स्थिति को जानते थे। वह वास्तव में एक धर्मपरायण व्यक्ति थे, एक धर्मपरायण पति का पुत्र थे, जो दोनों ही अल्लाह के अधीन होने के लिए प्रतबिद्ध थे। पैगंबर इब्राहिम अपने बेटे को उस स्थान पर ले गए जहां उसकी बलि दी जानी थी और उसे मुंह के बल लट्टि दिया। इसलिए ईश्वर ने उन्हें सबसे सुंदर शब्दों में वर्णित किया है, अधीन होने के सार का एक चित्र चित्रित किया है; जो आंखों में आंसू ला देता है

अन्ततः, जब दोनों ने स्वयं को अर्पित कर दिया और उस (पति) ने उसे गरिा दिया माथे के बल (बलि देने के लिए)। (कुरआन 37: 103)

जैसे ही इब्राहिम का चाकू चलने को तैयार था, एक आवाज ने उसे रोक लिया

तब हमने उसे आवाज दी कि है इब्राहिम! तूने सच कर दिया अपना सपना। इसी प्रकार, हम प्रतफिल प्रदान करते हैं सदाचारियों को। वास्तव में, ये खुली परीक्षा थी। (कुरआन 37: 104-106)

वास्तव में, यह सबसे बड़ी परीक्षा थी, अपने प्यारे बच्चे का बलदान, जो उसके बुढ़ापे में और संतान की लालसा के वर्षों बाद पैदा हुआ था। यहां, इब्राहीम ने अल्लाह की खातिर कुछ भी बलदान करने की इच्छा दिखाई, और इस कारण से, उन्हें सभी मानवता का सरदार बना दिया गया, और ईश्वर ने उनकी सभी संतानों को पैगंबर होने का आशीर्वाद दिया। यह महत्वपूर्ण घटना हमें सिखाती है कि किसी व्यक्ति के अस्तित्व का कोई अर्थ या मूल्य नहीं है सिवाय इसके कि वह इसका उपयोग अल्लाह को खुश करने के लिए करे।

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/176>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।